Dated 19/9/2020

B.A Part-2 (H) Philosophy

S/o अनीता कुमारी गुप्ता
जे० के० कॉलेज बिरौल

लॉक के दर्शन में ज्ञान के विभिन्न स्तरों की व्याख्या करें।

Ans:- लॉक के अनुसार ज्ञान के तीन स्तर हैं :— (1) आन्तर प्रत्यक्ष ज्ञान (Intuitive Knowledge) आन्तर-प्रत्यक्ष ज्ञान सहज तथा स्वयंसिद्ध ज्ञान है, इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं। तात्पर्य यह कि ज्ञान तो प्रत्ययों की पारस्परिक संगति है। कभी-कभी इनमें इस पारस्परिक संगति का भान सद्यः हो जाता है, अर्थात इसकी संगति के लिए दूसरे किसी की अपेक्षा नहीं रहती। इसकी सत्यता स्वतः प्रकट होती है, इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं। जैसे आँखों को रूप का ज्ञान स्वतः होता है, उसी प्रकार बुद्धि को सद्यः ज्ञान की सत्यता का अनुभव स्वतः होता है। उदाहरणार्थ उजला काला नहीं है वृत्त त्रिभुज नहीं है, तीन दो से ज्यादा है तथा दो और एक का योग है। ये सभी ज्ञान स्वयंसिद्ध है, क्योंकि ये संदेह रहित हैं तथा इनकी निश्चयात्मकता अपने से ही उत्पन्न होती है। इन्हें स्वतः सिद्ध कहा जा सकता है। लॉक इसे प्रथम स्तर की सत्यता स्वीकार करते हैं; क्योंकि इसे परीक्षा करने की आवश्यकता नहीं इसकी प्रामाणिकता स्वतः है। (2) परोक्ष ज्ञान (Demonstrative Knowledge) परोक्ष ज्ञान की सत्यता का तर्क (Reasoning) के द्वारा निदर्शन किया जाता है। इसे परोक्ष इसलिए माना गया है कि इसमें किसी अन्य ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्ययों की पारस्परिक संगति की सिद्धि के लिए हम तर्क का सहारा लेते हैं। हमारी बुद्धि को इसकी सत्यता का भान तो होता है, परन्तु किसी माध्यम से अर्थात, तर्क से इसकी सत्यता सिद्ध होती है। जैसे त्रिभुज के तीन भुजाओं तथा दो भुजाओं में किसका योग बड़ा होगा। इसका ज्ञान हमें स्वतः नहीं हो सकता। इसके लिए हमें किसी अन्य त्रिभुज की तीन भुजाओं तथा दो भुजाओं के योग की परीक्षा करनी पड़ेगी, तभी हम उचित निष्कर्ष निकाल सकते हैं। अतः इसकी सत्यता के लिए तर्क की आवश्यकता है। इसे निगमनात्मक तर्क की प्रणाली भी कहा गया है। (3) बाह्य-प्रत्यक्ष ज्ञान (Sensitive Knowledge) ज्ञान का तीसरा स्तर बाह्य प्रत्यक्ष का है। बाह्य-प्रत्यक्ष से लॉक का तात्पर्य बाह्य जगत के पदार्थों का ज्ञान है, जिसका हमें प्रत्यक्ष होता है। हमें रूप, रस, गन्ध, स्पर्श आदि की संवेदनाएँ आँख, कान, मुख आदि से सर्वदा प्राप्त होती रहती हैं। अतः संवेदनाओं के कारण स्वरूप बाह्य पदार्थ की सत्ता अवश्य स्वीकार करनी पड़ेगी।